International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

"अर्थशास्त्र में नीति तत्त्व विमर्श"

बृजेश कुमार सिंह (शोधछात्र)
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज

प्राचीनकाल में अर्थशास्त्र शब्द का का प्रयोग एक व्यापक अर्थ में होता रहा है। इसके अन्तर्गत मूलतः राजनीति शास्त्र का एवं आनुषंगिक रूप से धर्मशास्त्र (Theology) अर्थशास्त्र (Economics), कानून (Law) आदि का अध्ययन किया जाता था। आचार्य कौटिल्य ने 'अर्थ' शब्द के दो अर्थ उद्धृत किये हैं– मनुष्यों की आजीविका और वह भूमि जिस पर मनुष्य निवास करते हैं। उस भूमि की प्राप्ति और रक्षा के उपायों का जिसमें वर्णन रहता है उसे अर्थशास्त्र कहते हैं।[1]

आचार्य कौटिल्य के अनुसार राजनीतिशास्त्र एक स्वतंत्र शास्त्र है और आन्वीक्षिकी (दर्शन), त्रयी (वेद) तथा वार्ता (अर्थशास्त्र) एवं कानून आदि उसकी शाखाएँ हैं। सम्पूर्ण समाज की रक्षा राजनीति या दण्ड–व्यवस्था से ही होती है एवं रक्षित प्रजा ही अपने–अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकती है।[2] अतः वर्तमान समय में भी अर्थशास्त्र का अध्ययन परमावश्यक है।

---

1 मनुष्याणां वृत्तिरर्थः.....शास्त्रमर्थशास्त्रमिति।।''– कौटिलीय अर्थशास्त्र, अधिकरण 15, अध्याय (1)

2 चतुवर्णाश्रमो लोको राज्ञा दण्डेन पालितः।
स्वधर्मकर्माभिरतो वर्तते स्वेषु वेश्मसु।।–कौटिलीय अर्थशास्त्र, अधिकरण (1), अध्याय 4)

आचार्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में राज्य की उत्पत्ति का सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया है जिसमें उन्होंने पाश्चात्य चिन्तकों द्वारा प्रतिपादित राज्य के चारआवश्यक तत्त्वों (1) भूमि, (2) जनसंख्या, (3) सरकार, (4) सम्प्रभुता का विवरण न देकर, राज्य के सात तत्त्वों का विवेचन किया है। इस सम्बन्ध में आचार्य राज्य की परिभाषा नहीं देते अपितु पहले से चले आ रहे सप्तांग सिद्धान्त का समर्थन करते हैं।[3]

राज्य उत्पत्ति के पश्चात् आचार्य चाणक्य राज्य की सुरक्षा से सम्बन्धित विदेश नीति, कूटनीति, शिल्पनीति आदि नीतियों की विस्तार से चर्चा करते हैं। कौटिल्य ने विदेश सम्बन्धों के संचालन हेतु छः प्रकार की नीतियों का विवरण प्रस्तुत किया है– सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैधीभाव।[4] कूटनीति के सम्बन्धों का विश्लेषण करने हेतु आचार्य ने **मण्डल सिद्धान्त** प्रतिपादित किया है। कौटिल्य का यह सिद्धान्त यथार्थवाद पर आधारित है, जो युद्धों को अन्ताराष्ट्रिय सम्बन्धों की वास्तविकता मानकर संधि व समझौते द्वारा शक्ति–संतुलन बनाने पर बल देता है।

इसके अतिरिक्त आचार्य कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में दण्डनीति, सामाजिक नीति और आर्थिक नीति से सम्बन्धित अनेक प्रकार के सिद्धान्तों का विस्तार से प्रतिपादन करते हैं जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते

[3] स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोश दण्डमित्राणि प्रकृतयः।। अर्थशास्त्र 06.1.01।।
[4] कौटिलीय अर्थशास्त्र, सप्तममधिकरणम्।।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

हैं।राज्य की सुरक्षा नीति से सम्बन्धित विभिन्न पदों पर अमात्यों की नियुक्ति के प्रसंग में आचार्य पराशर का उल्लेख कौटिलीय अर्थशास्त्र में हुआ है।[5] इसके अतिरिक्त अनेक स्थलों–मन्त्राधिकार[6], राजपुत्रों से राजा की रक्षा[7], कर्मचारियों के अपराध करने पर दण्ड निरूपण[8], जनपद एवं दुर्ग की आपत्ति[9] तथा अर्थदूषण और दण्ड[10] आदि के विवेचन के प्रसंग में पराशर के मतानुयायियों का उल्लेख किया गया है। अर्थशास्त्र में वर्णित प्राचीन हिन्दू राज्य के पदाधिकारियों के पद इस प्रकार हैं–

पद	अंग्रेजी	पद	अंग्रेजी
राजा	King	युवराज	Crown Prince
सेनापति	Chief, Armed forces	परिषद	Council
नागरिक	City Manager	पौरव्य वाहारिक	City Overseer
मंत्री	Counselor	कार्मिक	Works Officer
संनिधाता	Treasurer	कार्मान्तरिक	Director Factories
अन्तेपाल	Frontier Commander	अन्तरविंसक	Head, Guards
दौवारिक	Chief Guard	गोप	Revenue Officer
पुरोहित	Chaplain	करणिक	Accounts Officer
प्रशास्ता (आयुधाध्यक्ष)	Administrator	नायक	Commander
उपयुक्त	Junior Officer	प्रदेष्टा	Magistrate

5 साधारण एष दोष इति पराशरः। तेषामपि मर्मज्ञभयाकृतकृतान्यनुवर्तेत।'–कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/8
6 कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/15
7 वही 1/17
8 वही 2/7
9 वही 8/1
10 वही 8/3

		(दण्डाधिकारी)	
शून्यपाल	Regent	अध्यक्ष	Superintendent

अर्थशास्त्र में आचार्य कौटिल्य चार प्रकार की विद्याओं का वर्णन करते हैं–

1. आन्वीक्षिकी– दर्शनशास्त्र (सभी विद्याओं का प्रदीप)[11]
2. त्रयी– (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद संयुक्त रूप से)
3. वार्ता– (कृषि और पशुपालन)
4. दण्डनीति– (दण्ड विधान)

आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र) आत्मविद्या है। तीनों वेद (त्रयी), संपत्ति शास्त्र (वार्ता) तथा राजनीतिशस्त्र (दण्डनीति) यह चार विद्यायें हैं।[12] काव्यमीमांसा में राजशेखर ने कहा है कि इनका विद्यात्व यही है कि इनसे धर्म और अर्थ का ज्ञान होता है।[13] उपरोक्त सभी विद्याओं की सुख समृद्धि 'दण्ड–विद्या' पर निर्भर करती है, जो शासन को प्रतिपादित करती है, अप्राप्य वस्तुओं को प्राप्त करती है; प्राप्त वस्तुओं की रक्षा करती है, रक्षित वस्तुओं में वृद्धि करती है।

उपरोक्त सभी बातों पर यदि विचार करें तो यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्थशास्त्र में समसामयिक राजनीति, अर्थनीति, विधि, समाजनीति तथा धर्मादि

11 प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सवकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकीमता।।–कौटिलीय अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण
12 कौटिलीय अर्थशास्त्र अनु0 श्रीयुत प्राणनाथ विद्यालंकार पृ0 1
13 आमिधभाथौ यद्विद्यात्तद्विद्यानां विद्यात्वम्– काव्यमीमांसा द्वितीय अध्याय

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस विषय के जितने ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध हैं उनमें से वास्तविक जीवन का चित्रण करने के कारण यह सबसे अधिक मूल्यवान है। इस शास्त्र के प्रकाश में न केवल धर्म, अर्थ और काम का प्रणयन और पालन होता है, अपितु अधर्म, अनर्थ तथा अवांछनीय का शमन भी होता है।[14] ग्रन्थ के अन्त में आचार्य अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुये कहते हैं कि मनुष्यों की वृत्ति को 'अर्थ' कहते हैं। मनुष्यों से संयुक्त भूमि ही 'अर्थ' है। उसकी प्राप्ति तथा पालन के उपायों की विवेचना करने वाले शास्त्र को अर्थशास्त्र कहते हैं।[15] यह ग्रन्थ आज भी मानव जीवन के लिये प्रासंगिक है।

14 अर्थशास्त्र–15.4.31
15 कौटिलीय अर्थशास्त्र 15/1